1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः। यजुर्वेद 5/25
हे प्रभो ! हमसे द्वेश के भावों को दूर करो और कृपणता को दूर करो।
O God ! Drive away hatred and thanklessness from our lives.

वर्ष 38, अंक 43 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 7 सितम्बर, 2015 से रविवार 13 सितम्बर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

औरंगजेब या कलाम-भारतीयों के आदर्श कौन?

औरंगज़ेब रोड के नाम परिवर्तन को लेकर रुदाली गान

-डॉ. विवेक आर्य

जैसाकि अपेक्षित था वैसा ही हुआ। औरंगजेब के नाम पर सड़क के नाम का परिवर्तन कर रुदाली गान प्रारम्भ हो गया है। मुसलमान, वामपंथी, सिविल सोसाईटी के आदर्श एक्टिविस्ट, छद्म इतिहासकार,पेज थ्री के मानव अधिकार कार्यकर्ताओं के पेट में सबसे अधिक मरोड़ हो रही है। कोई औरंगज़ेब को न्यायप्रिय शासक, कोई जिन्दा पीर, तो कोई महान विजेता बताता है। औरंगजेब के जीवन के कुछ पहलुओं से आपको परिचित करवाना हमारा दायित्व है। क्योंकि असत्य को बढ़ा-चढ़ा कर प्रचारित करना और सत्य को छिपाना ''बौद्धिक जिहाद'' कहलाता है। इस लेख के माध्यम से औरंगज़ेब के जीवन के कुछ अनसुने मगर महत्वपूर्ण पहलुओं से हम आपको अवगत करवा रहे हैं-

1. औरंगज़ेब के जीवन में उसकी सनक ने मुगल सल्तनत बर्बाद कर दी। करीब 20 वर्षों तक दक्कन में चले युद्ध ने सरकारी खजाना समाप्त कर दिया, उसके सभी सरदार या तो बुड्ढ़े हो गये या मर गये। मगर विजयश्री हासिल नहीं हो सकी। अपने उत्कर्ष से मुगल सल्तनत जमीन पर आ गिरी और ताश के पत्तों के समान बिखर गयी। यह औरंगज़ेब की गलती के कारण हुआ।

2. औरंगज़ेब ने तख़्त के लिए अपने तीन भाइयों दारा शुको, शुजा और मुराद को मारा था। अपने बुड्ढ़े बाप को आगरा के किले में एक अंधेरी कोठरी में कैद कर दिया था। उस कोठरी में एक छोटी की खिड़की से शाहजहां ताजमहल को निहार कर अपने दिल की कसक पूरी करता था। शाहजहां को पूरे दिन में एक घड़ा पानी भर मिलता था। जेठ की दोपहरी में कंपकपाते बूढ़े हाथों से पानी लेते समय वह मटका टूट गया। शाहजहां ने दूसरे मटके की मांग की तो हवलदार ने यह कहकर मना कर दिया कि बादशाह का हुक्म नहीं है। तब पूर्व शंहशाह के मुख से निकला। ''हे अत्याचारी तुझसे भले तो हिन्दू हैं जो मरने के पश्चात् भी अपने पूर्वजों को श्राद्ध के नाम पर भोजन करवाते हैं। तू तो ऐसा निराधम है जो अपने जिन्दा बाप को भूखा-प्यासा मार रहा है।''

3. औरंगज़ेब ने अपने तीनों भाईयों को निर्दयता से मारा था। उसे सपने में उनकी स्मृतियां तंग करती रही। वह इतना शक्की हो गया कि अपने खुद के पुत्रों को कभी अपने समीप नहीं आने दिया। उन्हें सदा डांटता-डपटता रहता था। क्योंकि उसे लगता था कि वे गद्दी के लिए उसे ठीक वैसे न मार दें, जैसा उसने अपने सगों के साथ किया था। उसकी इस नीति के चलते उसके बेटे उसके जीवनकाल में ही बुड्ढ़े हो गये, मगर राजनीति का एक

...शेष पेज 5 पर

औरंगज़ेब ने अपनी सुन्नी फिरकापरस्ती के चलते मुहर्रम के जुलूस पर पाबन्दी लगा दी, पारसियों के नववर्ष त्यौहार को बंद कर दिया, दरबार में संगीत पर पाबन्दी लगा दी, हिन्दुओं पर तीर्थ यात्रा पर जज़िया कर लगा दिया, यहां तक कि साधु-फकीरों तक को नहीं छोड़ा। औरंगज़ेब के इस फरमान से आहत होकर वीर शिवाजी ने औरंगज़ेब को पत्र लिखकर चुनौती दी थी कि अगर हिम्मत हो तो उनसे जज़िया कर वसूल कर दिखायें। आरंगज़ेब ने होली पर प्रतिबन्धि लगाकर, मन्दिरों में गोहत्या करवाकर, अनेक मन्दिरों को तुड़वाकर अपने आपको ''आलमगीर'' बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

क्या बनना उचित होगा, गांधी जी के ''बन्दर'' या वेद के ''मनुष्य''?

बाल्यकाल से ही स्कूल में शिक्षक व अनेक समाज/सार्वजनिक स्थानों पर अग्रणी पुरुष,बच्चों को ''गान्धी जी के बन्दर'' बनने के लिए प्रेरित व बाध्य करते थे और हैं। गान्धी जी के तीन बन्दरों में एक बन्दर अपनी आंखें बन्द किये रखता है, दूसरा कान बन्द रखता है और तीसरा अपना मुख बन्द रखता है। इस चित्रात्मक प्रस्तुति का अर्थ करते/बताते हुए शिक्षक या समाज के अग्रणी समझाते हैं कि देखो बच्चो! पहला बन्दर हमें कह रहा है कि हमें बुरा नहीं देखना, दूसरा बन्दर शिक्षा देता है कि हमें बुरा नहीं सुनना और तीसरा बन्दर कहता है कि हमें बुरा नहीं बोलना है। प्रथम दृष्टि में/सुनने में यह प्रसंग बहुत अच्छा लगता है लेकिन गहराई से विचारने पर पता चलता है कि ये विचार ठीक नहीं हैं।

वैसे उपरोक्त बन्दरों वाली प्रस्तुति वेद मंत्र का ही बन्दर-रूपांतरण है।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

(यजु. अध्याय. 36 मंत्र 24)

उपरोक्त वेद मंत्र में भी यही क्रम दिया है। मंत्र कहता है कि प्रथम हम देखें, अनन्तर सुने और फिर बोलें। मंत्र और बन्दर वाली प्रस्तुति में अन्तर केवल विधि-निषेध का ही है। बन्दर वाली प्रस्तुति निषेध करती है (नकारात्मक प्रस्तुति) लेकिन मंत्र हमें देखने, सुनने व कहने के लिए निर्देश करता है (सकारात्मक निर्देश) अब विषय पर विचार करते हैं :-

गान्धी जी के बन्दर न बनें, यदि बनना ही है तो वेद के मनुष्य बनें क्योंकि मनुष्य उसी को कहते हैं जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझता है। अन्यायकारी बलवान् से भी नहीं डरता और धर्मात्मा निर्बल और गुण रहित क्यों न हों उनकी रक्षा, उन्नति, प्रिय आचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी हो तथापित उसका नाश, अवनति और अप्रिय आचरण सदा करता है।

(1) प्रथम तो यह कि हम बन्दर नहीं है और न ही हमारे पूर्वज बन्दर थे। स्कूल में डार्विन-शिक्षा समझाते हुए हमें यह बताया जाता था/है कि हम बन्दर की सन्तान हैं अर्थात् हमारे पूर्वज बन्दर थे-जोकि एक झूठ है। वेद कहता है कि हम मनुष्य हैं (ऋ. 1/164/45)

(2) दूसरा, आंखें बन्द कर लेने पर सामने क्या हो रहा है यह दिखाई नहीं देगा और जब दिखाई नहीं देगा तो व्यक्ति सुनने के लिए प्रयास नहीं करेगा अर्थात् सुनी-अनसुनी कर देगा। यदि कान बन्द कर लेगा तो कहा गया वचन अच्छा था या बुरा आदि का ज्ञान नहीं होगा। अच्छे-बुरे के ज्ञान के लिए आंख व कान खुले रखने चाहिए न कि गान्धी जी की शिक्षा अनुसार कान बन्द करके रखना चाहिए।

(3) तीसरा, आंख व कान बन्द करके रखेंगे तो बुरे का ज्ञान न होगा जिसके कारण हम उसका विरोध भी नहीं कर सकेंगे और बुरा व्यक्ति, बुरी शक्तियां, बुरी प्रथायें हमें प्रताड़ित करेंगी और हम अन्याय सहन करते रहेंगे इसलिए आंखें खुली रखें और कान भी खोल कर रखें ताकि बुराई को जान हम अच्छाई की स्थापना करने में उद्यत रहें। जब कान खुले रहेंगे तब ही हम ''सत्य को ग्रहण कर व असत्य को छोड़ पाने में सर्वदा उद्यत रह पाएंगे।'' मुख बन्द होगा तो हम विरोध भी नहीं कर सकेंगे इसलिए मुख खुला रहना चाहिए।

(4) चौथा, वेद की स्पष्ट शिक्षा है कि ''भद्रं कर्णेभि' श्रृणुयामदेवा

...शेष पेज 5 पर

स्वाध्याय

विविध युद्धों में मुख्य रक्षक और सहायक परमेश्वर

शब्दार्थ - अग्ने - हे अग्ने! तू यं मर्त्यम्- जिस मनुष्य की पृत्सु अवा:- युद्धों में रक्षा करता है और यं वाजेषु जुना:-और जिसकी युद्धों में सहायता करता है स: - वह मनुष्य शश्वती:-नित्य सनातन इष:- अन्नों को यन्ता- वश करता है-प्राप्त करता है।

यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुना:। स यन्ता शश्वतीरिष:।।
ऋ. 1।27।7।

विनय - इस संसार में मनुष्य को प्रत्येक अभीष्ट फल पाने के लिए लड़ाईयां लड़नी पड़ती हैं। संसार में नाना प्रकार के संघर्ष चल रहे हैं। हे प्रभो! जिस मनुष्य की तुम इन संग्रामों में रक्षा करते हो, अर्थात् जिस तुम्हारे अनन्य भक्त को सदा तुम्हारी सहायता मिलती रहती है, उस मनुष्य को नित्य अक्षय अन्न प्राप्त होते हैं। उसे रोटी के सवाल के लिए कोई लड़ाई नहीं लड़नी पड़ती। वह इससे निश्चिन्त हो जाता है, क्योंकि उसे एक नित्य अन्न मिल जाता है, जिससे वह सदा ही तृप्त बना रहता है। वह जानता है कि जिसे तूने यह शरीर दिया है और जो तू उसके इस शरीर की नाना प्रकार से रक्षा कर रहा है, वहीं तू उसके इस शरीर को अन्न भी देता रहेगा। सब संसार के पशु-पक्षियों की चिन्ता करने वाला तू उसके शरीर की भी स्वयं चिन्ता करेगा, नहीं तो शरीर को ही वापस ले-लेगा। वह जानता है कि अपने भक्तों के प्रति उसकी यह प्रतिज्ञा है ''तेषां निव्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्'' (गीता 9।22)। भक्तों के योगक्षेम करने की चिन्ता तूने अपने ऊपर ले-रखी है। बस, यही ज्ञान है जिसके कारण वे निश्चिन्त रहते हैं- तृप्त रहते हैं। यही ज्ञान ''नित्य अन्न'' है। यह रोटी का अन्न तो अनित्य है। आज खाते है।, कल फिर भूख लग आती है। इससे नित्य तृप्ति प्राप्त नहीं होती; परन्तु इस आत्मज्ञान को प्राप्त करके वे सदा के लिए तृप्त हो जाते हैं। वे इसी आत्मज्ञान पर जीते हैं; रोटी पर नहीं जीते, अतएव रोटी न मिलने पर (शरीर छूटने पर) वे मरते भी नहीं; वे अमर हो चुके होते हैं। हम लोग रोटी पर ही जीते हैं और रोटी न मिलने पर मर जाते हैं। इस अनित्य अन्न (रोटी) के हमेशा मिलते रहने का प्रबन्ध नहीं करके यदि इसे नित्य बनाने का यत्न किया जाए तो भी यह नित्य नहीं बनता; नित्य वृप्ति कारक नहीं रहता, क्योंकि हमेशा अन्न मिलते रहने पर भी यह शरीर एक दिन बूढ़ा होकर छूट ही जाता है रोटी उस समय उसकी तृष्टि व रक्षा नहीं कर सकती, अत: नित्य-अन्न तो ज्ञातृप्ति ही है। हे परमेश्वर। इस युद्धमय संसार में तुम जिसके सहायक होते हो उसे यह शश्वत् अन्न देकर-इस शश्वत् 'इष्' का स्वामी बनाकर-उसे अमर भी कर देते हो।

-साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।
- विजय आर्य
मो. 09540040339

सम्पादकीय

शरियत कानून आधा-अधूरा लागू क्यों?

भारत में जब-जब अपराध की बात आती है तो कई सारे मौलवी-मौलाना हमेशा एक स्वर में एक बात कहते हैं कि सारेअपराधों को खत्म करना है तो शरियत कानून लागू कर दो। यह सुनकर मेरे मन में एक विचार आता है कि बहुत पहले हमारे मोहल्ले में साईकिल पर एक चूरन बेचने वाला आता था। जो हर मर्ज का इलाज अपने चूरन द्वारा ठीक होने का दावा करता था। पेट में गैस हो या दांत का दर्द, बदहजमी हो और तो और आंखों की रोशनी बढ़ाने का भी दावा करता था। वो सिर्फ दावा करता था। पर मैं सिर्फ एक बात पूछता हूँ, कि भारत में अधूरा शरियत कानून लागू क्यों? इसे या तो पूर्ण रुप से लागू करो या फिर बिल्कुल समाप्त कर दो! भारत में मुसलमानों के लिये विवाह, विरासत, और वक्फ सम्पत्ति से जुड़े मुसलमानों के अधिकांश मामले मुस्लिम कानून (शरियत) द्वारा नियंत्रित होते हैं और अदालतों से ये कानून पारित है कि मुसलमानों को अपने व्यक्तिगत मामलों में भारतीय संविधान की अपेक्षा अपने इस्लामिक कानून को लागू करने की अधिक प्रधानता होगी। मतलब एक शादी करो या चार, दो बच्चे पैदा करो या दस भारत का संविधान आपको नहीं रोकेगा! आप कभी भी किसी औरत से शादी कर सकते हैं, और फिर कभी भी तीन बार तलाक, तलाक, तलाक कह कर उसकी छुट्टी कर सकते हैं। साफ बात यह है कि व्यक्तिगत जीवन का आनंद समझे जाने वाले सभी स्रोत खुले रखने के लिए शरियत कानून की जरुरत भारतीय मुसलमानों को है किन्तु जब चोरी जैसे अपराध में शरियत के मुताबिक हाथ कटने की बात आती, तो ये शरियत को भूलकर भारतीय संविधान में अपनी आस्था जताने लगते हैं।

वैसे तो भारत में कई और भी अल्पसंख्यक धर्म हैं पर इस्लाम एक ऐसा मजहब है जिसका मुस्लिम पर्सनल लॉ जैसा खुद का कानून है, जोकि शरियत पर आधारित है और भारत में पूर्ण रूप से लागू नहीं है। यदि भारत में मुसलमानों के लिये शरियत कानून लागू कर देते है, तब क्या होगा?

यह जानने के लिये हमें जाना होगा उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में; केस था ससुर द्वारा अपनी पुत्रवधू 'इमराना' का बलात्कार। इमराना नाम की एक महिला का बलात्कार ससुर ने कर दिया, जिसकी शिकायत इमराना ने अपने शौहर से की, पर उसने पिता को कुछ न कहा। फिर इमराना के मायके वालों के हस्तक्षेप के बाद पंचायत बुलाई गयी जिसने शरियत के तहत फैसला सुनाया कि अब इमराना को अपने पति को तलाक देकर अपने ससुर से निकाह करना पड़ेगा और अपने पति को अपना बेटा मानना पड़ेगा। विचार करने की बात तो यह है कि इस कुकृत्य पर दारुल उलूम जिसे अरबी भाषा में ज्ञान का घर कहते हैं उसने भी इस फैसले पर मोहर लगा दी कि इमराना अब अपने पति की मां है और उसे अब तलाक देना पड़ेगा। मैं आपको बता दूँ कि यह विवाह नहीं था बलात्कार जैसा घिनौना अपराध था। हालांकि इस इस्लामिक फैसले से आहत इमराना ने न्याय के लिये भारतीय संविधान का सहारा लिया और दोषी ससुर को जेल भिजवाया। पर यहां कई प्रश्न एक साथ खड़े रह गये कि क्या शरियत के मुताबिक यह इंसाफ था? शरियत के कानून के हिसाब से तो बलात्कार के दोषी को सजा-ए- मौत दी जाती है। वो भी बंद दरवाजों के पीछे नहीं बल्कि सार्वजनिक स्थल पर, सरेआम सर कलम किया जाता है। लेकिन दारुल उलूम व मौलवी जानते हैं कि शरियत की आड़ में महिलाओं का शोषण कर मजहब के बहाने कई शादियां कर अपनी वासनाओं की पूर्ति कर बच्चे पैदा करना है? पर मैं चाहता हूँ भारत में शरियत इनके लिये पूर्ण रुप से लागू हो। क्या चोरी करने के आरोप में हाथ काट दिये जाये? क्यों न अवैध सम्बन्ध रखने पर पत्थरों से मार-मार कर मौत की सजा होनी चाहिये? शरियत के अनुसार मुस्लिम महिला वोट नहीं डाल सकती, कार-स्कूटी नहीं चला सकती। पुरुष का अपमान करने पर 70 कोड़ों की सजा का प्रावधान है और राष्ट्र द्रोह के मामले में सर कलम करने की सजा का प्रावधान है। अभी हाल ही में सउदी अरब के अन्दर ड्रग्स स्मगलिंग के दो दोषियों के सर को चौराहे के बीच कलम कर दिया गया। क्यों न भारत में भी इनके मजहब के अनुसार सजा का प्रावधान हो? शरियत के अनुसार तो हज यात्रा पर मिलने वाली छूट भी हराम है। क्यों भारत सरकार हर साल प्रतियात्री 47,454 रुपये अनुदान देती है। मेरी किसी मजहब विशेष से कोई ईर्ष्या नही बस कहने का तात्पर्य इतना है या तो सरकार कोई भी कानून पूर्ण रुप से लागू करे या फिर बिल्कुल खत्म करे दे। -सम्पादक

ग्रन्थ परिचय

आर्योद्देश्य रत्न माला

प्रश्न 1 : इस पुस्तक का विषय क्या है?
उत्तर : इसमें महत्त्वपूर्ण व्यावहारिक शब्दों (आर्यो के मन्तव्यों) की परिभाषाएं प्रस्तुत की गई हैं, जो वेदादि शास्त्रों पर आधारित हैं।

प्रश्न 2 : कितने मन्तव्यों का अर्थ दिया गया है?
उत्तर : इसमें 100 मन्तव्यों (नियमों) का संग्रह है।

प्रश्न 3 : पुस्तक में कौन-सी भाषा का प्रयोग है?
उत्तर : हिन्दी भाषा का।

प्रश्न 4 : पुस्तक का उद्देश्य क्या है?
उत्तर : धर्म व व्यवहार में आने वाले इन शब्दों एवं नियमों का सच्चा व वास्तविक अर्थ समझ कर व्यक्ति भटकने से बच जाए। अत: सब मनुष्यों के हितार्थ लिखी गयी।

प्रश्न 5 : रचना का समय क्या है?
उत्तर : विक्रमी संवत् 1934, श्रावण मास के शुक्लपक्ष की सप्तमी, बुधवार के दिन पूर्ण हुई।

प्रश्न 6 : क्या इस पुस्तक का किसी अन्य भाषा में भी अनुवाद हुआ है?
उत्तर : हां, इसका अंग्रेजी भाषा में भी अनुवाद किया गया है।

-साभार :
महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।
- विजय आर्य, मो. 09540040339

प्रेरक प्रसंग

वे दिल जले

बीसवीं शताब्दी के पहले दशक की बात है। अद्वितीय शास्त्रार्थ महारथी पण्डित श्री गणपतिजी शर्मा की पत्नी का निधन हो गया। तब वे आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक थे। आपकी पत्नी के निधन को अभी एक ही सप्ताह बीता था कि आप कुरुक्षेत्र के मेला सूर्यग्रहण पर वैदिक धर्म के प्रचारार्थ पहुंच गये। सभी को यह देखकर बड़ा अचम्भा हुआ कि यह विद्वान् भी कितना मनोबल व धर्मबल रखता है। इसकी कैसी अनूठी लगन है। उस मेले पर ईसाई मिशन व अन्य भी कई मिशनों के प्रचार-शिविर लगे थे, परन्तु तत्कालीन पत्रों में मेले का जो वृत्तान्त छपा उसमें आर्य समाज के प्रचार-शिविर की बड़ी प्रशंसा थी। प्रयाग के अंग्रेजी पत्र पायनियर में एक विदेशी ने लिखा था कि आर्य समाज का प्रचार-शिविर के लोगों के लिए विशेष आकर्षण रखता था और आर्यो को वहां विशेष सफलता प्राप्त हुई। आर्य समाज के प्रभाव व सफलता का मुख्य कारण ऐसे गुणी विद्वानों का धर्मानुराग व वेद के ऊंचे सिद्धान्त ही तो थे। **-साभार :**
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

वैदिक भक्तियोग

...वैदिक भक्ति, ईश्वर के विभिन्न स्वरूपों के प्रति की गयी स्तुतियों और अपने कल्याणार्थ भक्तों द्वारा ईश्वर के प्रति ही की गयी प्रार्थनाओं का योग है। ईश्वर को वैदिक मंत्रों में सृष्टि का व्यवस्थापक, शासक, राजा, दण्ड प्रदाता, जीवों को उनके कर्मानुसार फल देने वाला, न्यायकर्त्ता, स्वामी, पिता, माता, बन्धु और सखा आदि सभी रूपों में स्तोतों द्वारा स्वीकार किया गया है। ईश्वर के इन स्वरूपों की स्तुति स्तोत्रों द्वारा वैदिक मंत्रों में की गयी है।...

वैदिक भक्ति, ईश्वर के विभिन्न स्वरूपों के प्रति की गयी स्तुतियों और अपने कल्याणार्थ भक्तों द्वारा ईश्वर के प्रति ही की गयी प्रार्थनाओं का योग है। ईश्वर को वैदिक मंत्रों में सृष्टि का व्यवस्थापक, शासक, राजा, दण्ड प्रदाता, जीवों को उनके कर्मानुसार फल देने वाला, न्यायकर्त्ता, स्वामी, पिता, माता, बन्धु और सखा आदि सभी रूपों में स्तोत्रों द्वारा स्वीकार किया गया है। ईश्वर के इन स्वरूपों की स्तुति स्तोत्रों द्वारा वैदिक मंत्रों में निम्न प्रकार से की गयी है।

नियमों को धारण करते हुए, शुभ कर्म करने वाले, वरणीय प्रभु, अपनी समस्त प्रजाओं के भीतर राज्य करने के लिए बैठे हुए हैं (ऋ. 1.25.10) जो मनुष्य खड़ा है या चलता है अथवा दूसरे लोगों से ठगी करता है या छिपकर काम करता है अथवा दूसरे लोगों को धमकाता है या जो लोग छिपकर मंत्रणा (साजिश) करते हैं, इन सबके कार्यो पर राजा रूपी ईश्वर नज़र रखता है (अथर्व. 4.16.2)। दण्ड से बचने के लिए, यदि कोई जीव सृष्टि के किसी भी कोने में जाकर छिपना चाहे, वह ईश्वर की दृष्टि से बच नहीं सकता। ईश्वर के दूत ब्रह्माण्ड में सर्वत्र विचर रहे हैं और सब पर नज़र रखे हुए हैं (अथर्व. 4.16.4)।

विलक्षण शक्ति के स्वामी परमेश्वर ही सच्चे शासक हैं। शेष सभी लौकिक राजा लोग तो नाममात्र के शासक हैं। ईश्वर जिस ऐश्वर्य रूपी सरस्वती को मेघ के रूप में प्रवाहित करते हैं, उसी का छोटा सा अंश दान के रूप में इन लौकिक राजाओं को भी प्राप्त हो जाता है (ऋ.8. 21.18)।

सम्पूर्ण सृष्टि, (1) अचर, जड़ भूमि, पर्वत आदि की सृष्टि (2) प्राणवाली वृक्ष, वनस्पति आदि, (3) चजुष्पाद-चार पैरों वाली पशु आदि की सृष्टि और (4) द्विपद- मानव की सृष्टि। इन सबका शासक ईश्वर ही है (यजु. 23.3)। जो पैदा हो चुका है और जो अभी पैदा होने वाला है, उन सबका अधिष्ठाता वही एक ईश्वर है (अथर्व. 23.4.1)। जो सभी भूतों का अधिपति और सभी लोगों का स्वामी है तथा जो स्वयं भी महान् है, वही इस महान् संसार का ईश्वर है (यजु. 20.32) जो व्यक्ति दूसरों को सुख देते हैं, धार्मिक नियमों का पालन करते हैं, वे कभी भी नष्ट नहीं होते, पर दूसरों को जो दुःख पहुंचाते हैं, वे दुःखी होते हैं (ऋ.1.125.7)। दानी व्यक्ति को ईश्वर सदा शुभ फल प्रदान करते हैं (ऋ. 1.1.6)।

न्यायकारी ईश्वर हमारे लिए कल्याणकारी हों (यजु. 36.9) स्वार्थी व्यक्ति की सम्पत्ति को ईश्वर नष्ट कर देते हैं (ऋ.2.12.5) छली और शोषक व्यक्ति को ईश्वर अपनी माया द्वारा नष्ट कर देते हैं। जो बुद्धिमान् व्यक्ति इस रहस्य को समझता है, वह ईश्वर द्वारा उन्नति को प्राप्त करता है (ऋ. 1.11.7.)। ईश्वर पापी व्यक्ति पर भी दया करते हैं पर फिर भी हमें सदा पाप से बचना चाहिए, ताकि हम ईश्वर की दृष्टि में ऊंचा उठ सकें (ऋ. 7.87.7)। दयावान् प्रभु नग्न को वस्त्रों द्वारा ढंक देते हैं, बीमार व्यक्ति की व्यथा का हरण कर लेते हैं, अन्धे व्यक्ति को दृष्टि दे देते हैं तथा लंगड़े व्यक्ति को चलने की शक्ति दे देते हैं(ऋ.8.79.2)। ईश्वर हमारी इच्छाओं को पूर्ण करने वाले हैं तथा हमारी रक्षा करने वाले हैं।(ऋ6.45.16.)। चर एवं अचर जगत् के एकमात्र स्वामी ईश्वर ही हैं। हम उन्हें अपनी रक्षा के लिए पुकारते हैं।(यजु. 25.18)। प्रभु इन्द्र लोकों के स्वामी है और अपनी शक्ति से संसार पर शासन करने वाले हैं (ऋ.1.11.8)। ईश्वर ही हमारे एकमात्र स्वामी हैं। हमारे सभी कार्य ईश्वर के लिए ही समर्पित हैं। ईश्वर हमें किसी दूसरे निन्दक, बकवादी और अदानी की सेवा में न भेजें (ऋ. 7.31.57.)। हे ईश्वर आपकी कृपा से ही हम अपने प्रतिस्पर्धियों का सामना कर सकते हैं। आप हमारे हैं और हम तुम्हारे हैं (ऋ. 8. 92.32.)। हे प्रभु! मैं कहीं भी रहूं, आप मुझे कुछ न कुछ धन देते ही रहते हैं। आपके अतिरिक्त मेरा कोई नहीं है। आप ही मेरे पिता हैं(ऋ7.32.19.)। हे परमात्मा! आप ही हमारे माता और पिता हैं। आपसे ही हम आनन्द की प्राप्ति के लिए इच्छा रखते हैं (ऋ.8.98.11)। हे ईश्वर! आप ही हम मनुष्यों को भवसागर से तारने वाले माता-पिता हैं। आप ही जानने योग्य है।(ऋ.6.1.5.) परमात्मा ही हमारे बन्धु, जनक तथा पालनकर्त्ता हैं। आप ही समस्त लोकों के ज्ञाता हैं। अपने कर्मानुसार जीव आप में ही विचरण करते हैं (यजु.32.10.)। हे प्रभु। आप ही हमारे बन्धु, सम्बन्धी, मित्र तथा सखा हैं। अतः आप ही हमारी स्तुतियों के योग्य हों (ऋ.1.75.4)।

हे ईश्वर! आप ही अद्भुत मित्र हैं। हिंसा रहित कर्मो तथा यज्ञों में आपका शुभ रूप प्रकट होता है। आपकी ही शरण में हम स्तोता रहें। आपकी निकटता में रहने से कभी भी किसी का विनाश नहीं होता (अथर्व.1.94.13)। धैर्यवान् प्रभु इस महान् संसार पर राज्य कर रहे हैं। संसार की रक्षा के लिए उनकी भुजाएं सब ओर फैली हुई हैं(ऋ. 4.53.4)। परमात्मा सर्व-समर्थ हैं। वे ही स्तोता को अश्व, अन्न, वीर पुत्र, कर्त्तव्य-परायण पत्नी आदि सभी से सम्पन्न कर देते हैं (ऋ. 10.80.1.)। ईश्वर सहस्रों प्रकार से स्तोताओं को विभिन्न दान प्रदान करते हैं (ऋ.1.11.8)। हे प्रभु। आप सुन्दरता के स्रोत हैं। आपसे सौन्दर्य और सौभाग्य की धारायें ऐसे ही निकल कर फैलती हैं जैसे वृक्ष से शाखाएं। प्रभु ही स्तोता का धन, बल, ज्योति आदि प्रदान करते हैं (ऋ.6. 13.1)।

हे ईश्वर। हम सदा श्रद्धा और भक्तिभावना के साथ आपके चरणों में विराजमान रहें (ऋ.1.1.7.)।

इस प्रकार, स्तोताओं द्वारा ईश्वर के विभिन्न स्वरूपों की स्तुति करने के पश्चात् उनसे अपने कल्याणार्थ विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाएं भी वैदिक मंत्रों में की गयी हैं जोकि निम्न प्रकार से हैं।

हे अनेक भक्तों के द्वारा स्तुति किए जाते हुए प्रभो। हम तेरे ही हैं, तुम्हारा ही सहारा लेकर हम यहां पर चल रहे हैं। हे स्वामी। आपके अतिरिक्त हमारी बात सुनने वाला यहां पर कोई नहीं है। एकमात्र आप ही पृथ्वी के समान धैर्य धारण करने वाले हमारी बात को सुनने वाले हैं। अतः मैं आपको ही पुकार रहा हूं। आप ही मुझ दीन की प्रार्थना सुनो (ऋ. 1.57.4.)।

हे प्रभो! आप सर्व-व्यापक हैं, कल्याणकारी हैं। अतः आप हमारी अभीष्ट सिद्धि और पूर्ण सन्तुष्टि के लिए कल्याणकारी बनो। हमारे ऊपर सभी ओर से सुख की वर्षा करो (यजु. 36.12)। हे कल्याणकारी प्रभो। आप हमारी आयु की रक्षा करें। आप हमें अन्न और बल प्रदान करें। हमारी दुःख, लोभ आदि बाधाओं को दूर करें (ऋ.9. 66.19.21.)।

हे अग्ने। हम धन-सम्पत्ति आदि के सम्पादन में आपकी कृपा से सुपथ पर ही चलें। इस सम्बन्ध में हम छल-कपट आदि का सहारा ग्रहण न करें। सभी प्रकार की हमारी पापमयी वृत्ति को दूर कर दो। आपके चरणों में रहते हुए हम सदा सुपथ को ही अपनाएं। सत्पथ पर चलते हुए ही हमें धन-सम्पदा आदि प्राप्त हो (यजु. 40.16.)।

हे भक्तों द्वारा पुकारे जाने वाले प्रभो! हमें सभी प्रकार के द्वेष-भावों से मुक्त कर दो ताकि हम कल्याणकारी नाव पर सवार होकर इस भवसागर से पार हो जाएं। (ऋ. 8.16.11.)।

-डॉ. त्रिलोचन सिंह बिन्द्रा, होश्यारपुर, (साभार विश्वज्योति)

संस्कृतम्

सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्। (सत्संगतिः)

सतां सज्जनानां संगतिः सत्संगतिः कथ्यते। ये सज्जनाः साधवः पवित्रात्मनाः सन्ति, तेषां संगत्या मनुष्यः सज्जनः साधुः शिष्टश्च भवति। ये दुर्जनाः सन्ति तेषां संगत्या मनुष्यो दुर्जनो भवति, पतनं विनाशं च प्राप्नोति। ये सज्जनैः सह उपविशन्ति उत्तिष्ठन्ति पिबन्ति च, ते तथैव स्वभावं धारयन्ति। मनुष्यस्योपरि संगतेः महान् प्रभावो भवति। यादृशैः पुरुषैः सह स निवसति, तादृश एव स भवति। एत एवोच्यते-

संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति।।1।।
हीयते हि मतिस्तात, हीनैः सह समागमात्।
समैश्च समतामेति, विशिष्टैश्च विशिष्टताम्।।2।।

सज्जनानां संगत्या मनुष्य उन्नति प्राप्नोति। तस्य विद्या कीर्तिश्च वर्धेते। अतएव नीतिकारैः वारंवारम् एतदुक्तमस्ति यत्-

सद्भिरेव सहासीत, सद्भिः कुर्वीत संगतिम्।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च, नासद्भिः किंचिदाचरेत्।।3।।
पण्डितैः सह सांगत्यं, पण्डितैः सह संकथाः।
पण्डितैः सह मित्रत्वं, कुर्वाणो नावसीदति।।4।।

बाल्यकाले विशेषतो बालकस्योपरि संसगर्गस्य प्रभावो भवति। बालको यादृशैः बालकैः सह संगति करष्यिति तादृश एव भविष्यति। अतो बाल्यकाले दुर्जनैः सह संगतिरु कदापि न करणीया। दुर्जनाना संसर्गेण बहवो हानयो भवन्ति, यथा-दुर्जससंर्गेण मनुष्योऽसद्वृत्तो भवति, अतस्तस्य शरीरं क्षीणं निर्बलं च भवति, तस्य कीर्तिः नश्यति, सर्वत्रानादरो भवति, सर्वत्राप्रतिष्ठाभाजनं च भवति।

अतः स्वयशोवृद्धये ज्ञानवृद्धये सुखस्य शान्तेश्च प्राप्तये सवैरपि सर्वदा सत्संगतिः करणीया, दुर्जनसंगतिश्च हेया। अतएव सत्संगतिमाहात्म्ये एवम् उच्यते-

जाड्यं धियो हरति सिन्चति वाचि सत्यं,
मानोन्नति दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।।5

साभार : रचनानुवादकौमुदी

रचनानुवादकौमुदी
(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या श्री विजय आर्य मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

वेदों में वर्णित भावों के बोर्ड लगवाकर प्रचार-प्रसार में सहभागी बनें

जो आया है उसका जाना निश्चित है यही श्रृष्टि का नियम है लेकिन फिर भी हम सब यह भूलकर अपने दैनिक जीवन में उलझे रहते हैं। पर जब हम किसी सगे सम्बधी, परिवारीजन की शवयात्रा में शमशान घाट पर जाते हैं कम से कम वहां हमें कुछ ऐसा पढ़ने को मिले जो हमारी आत्मा को सत्य से परिचित करा सके। हमारा आप सभी महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि अपने गांव, शहर, कस्बे आदि के शमशान घाटों में वैदिक मंत्रो समेत उनके उच्चारण, सूक्तियां जरूर लिखवायें, यदि आपके पास समय का अभाव है तो अपने गांव के सरपंच, कस्बे के चेयरमैन से मिलकर यह सुझाव अवश्य दें।

सम्पूर्ण भारत के आर्य समाज और सभाओं के पदाधिकारियों से आग्रह है कि वे अपने क्षेत्र के शमशान भूमि में वेदों में वर्णित निम्नलिखित भावों को उनके भावार्थ सहित बैनर, होडिंग, या साईन बोर्ड पर लिखवाकर उसके नीचे यदि चाहें तो अपने आर्य समाज का नाम व पता भी लिखाकर अवश्य लगवाएं :-

अक्सर शमशान भूमि पर सैद्धान्तिक नियमों के विरुद्ध लिखे बोर्ड देखने को मिलते हैं जबकि ईश्वर द्वारा रचित सृष्टि के नियम से लोग अनभिज्ञ रहते हैं जिन्हें जानना मनुष्य के लिए अति आवश्यक है अतएव हम कुछ ऐसे वाक्यांश प्रस्तुत कर रहे है, जो आपके लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। **-सम्पादक**

1. ओ३म् क्रतो स्मर। -यजु 40-15
-हे कर्मठ जीव। तू ओ३म् का स्मरण कर।

2. कृतं स्मर। -यजु 40-15
-हे जीव! तू अपने किये कर्मो को स्मरण कर।

3. क्लिबे स्मर। -यजु 40-15
-हे जीव! अपनी त्रुटियों को स्मरण कर।

4. तव शरीर पतयिष्णु अर्वन्। -यजु 29-22
-हे जीव! तुम्हारा शरीर नश्वर है।

5. भस्मान्तं शरीरम्। -यज्ञ 40-15
-यह शरीर भस्मान्त है।

6. मृण्मयं गृहम्।
-यह शरीर मिट्टी का घर है अन्त में मिट्टी में ही मिल जायेगा।

7. मृत्युरीशे द्विपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम।
-मृत्यु दो पैरों और चार पैरों वाले सभी पर शासन करती है इससे कोई प्राणी बच नहीं सकता है।

8. अश्वत्थे वो निषदन पर्णे वो वसतिस्कृता। (अथर्ववेद)
-आदमी का संसार में निवास पीपल के पके पत्ते के समान है पता नहीं वायु के झोंके से वह पत्ता कब अलग हो जाये।

9. क्या लेकर आये जगत् में, क्या लेकर हम जायेंगे। आए मुठ्ठी बांधे जगत में, हाथ पसारे जायेंगे।।

10. कालः क्रिडति गच्छत्यायुः।
-काल का खेल चल रहा है तेजी से आयु निकल रही है।

11. अहन्यहनि भूतानि गच्छन्तहि यमालयम। शेषाः स्थावरमिच्छन्ति, किमाश्चर्यमतः परम्।।
-हम देख रहे हैं कि प्रतिदिन प्राणी मृत्यु के मुख में समा रहे हैं जो उत्पन्न हुए हैं वे मर रहे हैं फिर भी जो शेष हैं। वे सोचते हैं कि हम सदा जीवित रहेंगे, इससे बढ़कर और क्या आश्चर्य की बात हो सकती है।

12. कल नाम का कालका है और आज नाम अज (मोक्ष) का है।

13. कल के लिए कुछ न छोड़ो। जो छोड़ा तो समझो वह सदा के लिए छूट गया।

आर्य समाज का नाम ....पता ....

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी के तत्त्वावधान में

वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 30 अगस्त 2015 को वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दक्षिणी दिल्ली नगर निगम के महापौर श्री सुभाष आर्य ने हरियाली व प्रकृति के प्रति अपने भावों को सभी के समक्ष रखते हुए आश्वासन दिया कि आर्य समाज के अन्दर प्रांगण में व बाहर चारों ओर वृक्षों की व पौधों की इतनी सुन्दर व्यवस्था द.दि.न. निगम की ओर से की जाएगी कि पूरे पश्चिमी दिल्ली के आर्य समाज पर्यावरण व हरियाली की एक मिसाल होगी। निगम पार्षद श्री कर्मवीर शेखर, निगत पार्षद व द.दि.न.निगम की शिक्षा समिति के अध्यक्ष

श्री यशपाल आर्य व आर्य समाज प्रधान श्री वेद प्रकाश जी ने वृक्षा रोपण किया। इस अवसर पर साप्ताहिक सत्संग का आयोजन भी किया गया जिसमें सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित हुए।

आर्य समाज सिविल लाइन्स, अलीगढ़ द्वारा स्व. महेश चन्द्र की प्रथम पुण्य स्मृति में

यज्ञ एवं वेद संदेश कार्यक्रम का आयोजन

आर्य समाज, वैदिक आश्रम, सिविल लाइन्स, अलीगढ़ के तत्त्वावधान में स्व. श्री महेश चन्द्र 'संगीत रत्न' की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में यज्ञ एवं वेद संदेश कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आचार्य महेश चन्द्र गर्ग 'वेद रत्न' श्री राम विलास गुप्त 'वेदार्थी', आचार्य देव नारायण भारद्वाज के साथ-साथ अनेक आर्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। आचार्य राम प्रकाश शर्मा 'सरस', स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती, प्रधानाचार्य साधु आश्रम गुरुकुल, आचार्य जीवन केशरी, श्री शिशु पाल शास्त्री, श्री रामदीन पुरुषार्थी' प्रधान व श्री डॉ. पपेन्द्र आर्य, मंत्री आर्य समाज अलीगढ़, श्री केत मुनि आर्य समाज किशनपुर, ई. लटूरी सिंह समन्वयक वयस्वी सहयोग मण्डल ने उपस्थित होकर अपनी-अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित की।

आर्य सन्देश यदि आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा है या आप आर्य सन्देश के लिए कोई सुझाव या शिकायत करना चाहते हैं तो हमारी ई-मेल आई डी. aryasandeshdelhi@gmail.com पर मेल करें। साथ ही आप अपनी ई-मेल आई डी. भी लिखकर भेजें जिससे आपके पास आर्य सन्देश मेल के जरिए भेजा जा सके। **-सम्पादक**

कविता

महर्षि दयानन्द सरस्वती

लाखों आये इस जहान में,
एक ऋषिवर सा ढूंढे से मिला।
कैसे ये चुकेगा ऋण तेरा,
हम पर जो कर अहसान चला।
जीवन की होली खेले ऋषिवर,
वार कितनी खूनी तलवारों का।
जहर पी गये अपने हाथों,
झेले विषधर की फुंफकार यहां।
कर गया प्रकाशित जग को तू,
भय विहीनता का दे वरदान चला।
लाखों...............
धारे अविद्या देखे ऋषिवर,
वेद हीनता पतन दुनिया वालों का।
वेद पढ़ने-पढ़ाने का संदेश दिया जग को,
सींची रक्त से वैदिक वाटिका।
जांति-पांति का भयानक रोग तू,
बता वृथा जन्म का अभिमान चला।
लाखों.............
सत्यार्थ प्रकाश है ग्रन्थ अमर,
लिखा दिया निचोड़ वेद पुराणों का।
यज्ञ ही स्वर्गधाम बता जग को,
ज्ञान-विज्ञान का द्वार खुला।
अमरता की धारा बहाकर तू,
महावीर सिंह कर वो जीवन बलिदान चला।
लाखों..........। **-महावीर सिंह, दिल्ली**

कविता

नमस्ते जी

'नमः' और 'ते' की सन्धि से सुन्दर शब्द बन जाए "नमस्ते",
सप्रेम हार्दिक 'आदर' यूं, 'आप के लिए' दर्शाये "नमस्ते"।
श्रद्धा से दोनों हाथ जोड़, जब किया जाता "नमस्ते" उच्चारण,
अत्यन्त शोभनीय लगता यह प्राचीनतम संस्कृति द्योतक अभिनन्दन।।
दोनों हाथ जोड़कर जब हृदय के समीप है लाए जाते,
और श्रद्धा से थोड़ा शीश झुका वाणी उच्चारे "नमस्ते"।
ऐसे नम्र अभिवादन से होता स्वाभाविक ही प्रेम सत्कार प्रवाह,
और "नमस्ते" अभिवादन द्वारा परस्पर होती प्रसन्नता अथाह।।
हृदय समीप दोनों जुड़े हाथ माने जाते हैं आत्म शक्ति के प्रतीक,
भुजाएं दोनों शारीरिक बल द्योतक भरती हैं रक्षा भाव असीम।
मानसिक शक्ति द्योतक मस्तिक पूर्ण आदर को यहां दर्शाए,
गुड मॉर्निंग, ईवनिंग अथवा नाईट तो केवल समय बोध कराते,
हस्त-गले मिलन अथवा चुम्बन छूत दोग का भय दर्शाते।
दूर से हाई-बाई तो निरादर एवं तिरस्कार का संकेत दिखाते,
सभी दोषों से मुक्त, हर समय उपयुक्त, अभिवादन है केवल "नमस्ते जी"।।
छोड़ो यह हाई-बाईख गले मिलना, चुम्बन व हाथ मिलाना,
अपनाओ सर्वेत्तम "नमस्ते" जो चला आ रहा सनातन अभिनन्दन पुराना।
आदर, सत्कार, श्रद्धा प्रेम, सभी सार्थक होते जब "नमस्ते" से हो अभिनन्दन,
केवल "नमस्ते" अभिवादन में ही समावेश इन सभी गुणोंके होते है। दर्शन।।
माता-पिता, पति-पत्नि, छोटे-बड़े अथवा हों बहन-भाई,
सेवक-स्वामी, धनी-निर्धन, मित्र, बन्धु अथवा सखा सहाई।
सभी देश-विदेश, जाति धर्म के लोग मिलें अथवा जब करें पत्राचार,
"नमस्ते जी" से किया अभिवादन सके लिए सदा "फिट" बैठे सभी प्रकार।।
साभार - आर्य समाज मंदिर (बाली नगर-राजा गार्डन, दिल्ली)

पृष्ठ 1 का शेष — औरंगजेब और कलाम ...

पाठ भी न सीख सके। यही कारण था कि उसके मरने के बाद वे सभी राजकाज में अक्षम सिद्ध हुए। मुगलिया सल्तनत का दिवाला निकल गया। उसी के चिरागों ने उसी के महल में आग लगा दी।

4. औरंगज़ेब ने अपने पूर्वजों की राजपूतों से दोस्ती की नीति को तोड़ दिया। वह सदा राजपूत सरदारों को काफिर और इस्लाम का दुश्मन समझता था। इस नीति के चलते राजपूत सरदार उसकी ओर से किसी भी युद्ध में दिलोजान से नहीं लड़ते थे। मुसलमान सरदारों को इस्लाम की दुहाई देकर औरंगज़ेब भेजता। मगर शराब और शबाब में गले तक डूबे हुए सरदार अपने तम्बुओं में पड़े राजकोष के पैसे बर्बाद करते रहे। अंत में परिणाम वही 'ढाक के तीन पात'। मुगल साम्राज्य युद्ध पर युद्ध हारता चला गया। प्रान्त-प्रान्त में अनेक सरदार उठ खड़े हुए। महाराष्ट्र में वीर शिवाजी, बुंदेलखण्ड में वीर छत्रसाल, पंजाब में सिख गुरु, राजपूताना में दुर्गादास राठौड़ आदि उठ खड़े हुए। इस प्रतिरोध ने मुग़ल साम्राज्य की ईट से ईट बजा दी। अपने साम्राज्य के हर कोने से उठे प्रतिरोध को औरंगज़ेब न संभाल सका।

5. औरंगज़ेब ने मुसलमानों से लेकर गैर मुसलमानों पर अनेक अत्याचार किये। उसने अपनी सुन्नी फिरकापरस्ती के चलते मुहर्रम के जुलूस पर पाबन्दी लगा दी, पारसियों के नववर्ष त्यौहार को बंद कर दिया, दरबार में संगीत पर पाबन्दी लगा दी, हिन्दुओं पर तीर्थ यात्रा पर जज़िया 'कर' लगा दिया, यहां तक कि साधु-फकीरों तक को नहीं छोड़ा। औरंगज़ेब के इस फरमान से आहत होकर वीर शिवाजी ने औरंगज़ेब को पत्र लिखकर चुनौती दी थी कि अगर हिम्मत हो तो उनसे जज़िया 'कर' वसूल कर दिखायें। आरंगज़ेब ने होली पर प्रतिबिन्ध लगाकर, मन्दिरों में गोहत्या करवाकर, अनेक मन्दिरों को तुड़वाकर अपने आपको ''आलमगीर'' बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। काशी का विश्वनाथ मन्दिर, मथुरा का केशवराय मन्दिर औरंगज़ेब के हुक्म से नष्ट कर उनके स्थान पर मस्जिद बना दी गयी। मगर उसका परिणाम वही निकला जो हर अत्याचारी का निकलता है; बर्बादी। औरंगज़ेब को उसके कुकर्मों, उसके बाप के शाप, उसके भाईयों की हाय, हिन्दुओं के प्रति वैमनस्य की भावना और मज़हबी उन्माद ने बर्बाद कर दिया। ऐसे अत्याचारी के नाम से दिल्ली में सड़क का नाम होना बड़ी गलती थी। अब अगर यह गलती सुधर रही है तो इसे अवश्य सुधारना चाहिए। एक आदर्श, राष्ट्रवादी, वैज्ञानिक, महान व्यक्तित्व के धनी डॉ. अब्दुल कलाम के नाम पर सड़क के नामकरण में छद्म जमात को परेशानी हो रही है। एक अरब हिन्दुओं के देश में जहां पर हिन्दुओं की जनसंख्या 2011 के आकड़ों के मुताबिक लगभग 79 प्रतिशत है। मगर एकता के अभाव के चलते मुट्ठी भर लोग हमसे ज्यादती करने का प्रयास करते हैं। हमें क्या करना है-

हिन्दुओं के मध्य एकता ऐसी होनी चाहिए कि इसी सड़क का नाम वीर शिवाजी के नाम पर हो तो उसका प्रतिरोध करने का भी साहस किसी में न हो। यही इस लेख का मूल सन्देश है। औरंगज़ेब रोड की बारी अभी आई ही है। अकबर, फिरोजशाह, तुग़लक़ रोड अभी बाकी हैं।

वैदिक धर्म को समर्पित माता सुमित्रा देवी आर्य दिवंगत

'प्रिय परिवार की स्नेहमयी माता श्रीमती सुमित्रा देवी आर्या(85 वर्ष), धर्मपत्नी स्व. श्री देवप्रिय आर्य सिद्धांत शास्त्री, सोनीपत, का निधन दिनांक 30 अगस्त 2015 को हुआ। उनकी अंत्येष्टि गुड़गांव में की गयी तथा प्रार्थना सभा 2 सितम्बर 2015 को आर्य समाज सेक्टर 14 में लगभग 400 लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। पंडित फूलचंद शर्मा ''निडर'' भिवानी के प्रतिष्ठित आर्य परिवार से सम्बंधित माता जी अत्यंत सरल, स्वाध्यायशील, पूर्णरूप से वैदिक धर्म को समर्पित आर्य महिला थीं। वह अपने पीछे 9 पुत्र-पुत्रियों का विशाल प्रिय परिवार छोड़ गयी हैं। आपकी पांच पीढ़ियां निरंतर आर्य समाज की सेवा में संलग्न हैं जो भारत एवं विश्व के कई स्थानों पर वैदिक धर्म की परम्परा को आगे बढ़ा रहा है। मृत्यु से एक सप्ताह पूर्व माता जी का 85वां जन्मदिन परिवार के सदस्यों ने मिलजुल कर मनाया था। इस अवसर पर प्रिय परिवार की ओर से एक ट्रस्ट ''प्रिय परिवार फाउंडेशन'' की स्थापना की गयी। यह ट्रस्ट वैदिक धर्म के प्रचारार्थ कई माध्यमों से काम करेगा। इसी अवसर पर माताजी द्वारा संग्रहीत भजनों की पुस्तिका ''मेरे प्रिय गीत'' का विमोचन भी माताजी के हाथों किया गया। यह पुस्तिका प्रार्थना सभा के दिन सभी उपस्थित व्यक्तियों को प्रेरणा रूप में वितरित की गयी। मेरे प्रिय गीत पुस्तिका परिवार के सदस्यों से प्राप्त की जा सकती है।

-प्रिय परिवार, ऋतु प्रिय आर्य

पृष्ठ 1 का शेष — गान्धी जी के ...

भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः। यजुर्वेद 25/21 मंत्र में आदेश दिया है कि कानों से सदा भद्र सुनें, सुख के विषय की चर्चा ही सुने और आंखों से भद्र ही देखें। स्थिर स्वस्थ सबल सुडौल अंग तथा शरीर से युक्त होकर ईश्वर स्तुति- प्रार्थना- उपासना करते हुए उच्च कोटि के जीवन वाली आयु को प्राप्त करने की कामना है। मनुष्यों को योग्य है कि ईश्वर का ध्यान स्मरण करते हुए ही जितनी आयु है, उसका पूर्ण स्वस्थ व बलवान रहते हुए भोग करें। इसलिए गान्धी जी के बन्दर न बनें, यदि बनना ही है तो वेद के मनुष्य बनें क्योंकि मनुष्य उसी को कहते हैं जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझता है। अन्यायकारी बलवान् से भी नहीं डरता और धर्मात्मा निर्बल और गुण रहित क्यों न हों उनकी रक्षा, उन्नति, प्रिय आचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी हो तथापित उसका नाश, अवनति और अप्रिय आचरण सदा करता है अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा करता रहे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक् कभी न होता है। **-विश्वप्रिय वेदानुरागी**

दिव्य वैदिक सत्संग मण्डल, जयपुर का 5वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिव्य वैदिक सत्संग मण्डल जयपुर के तत्त्वावधान में 5वां वार्षिक उत्सव ''भजन सन्ध्या' के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह संयोजक श्री शतीश मित्तल थे राष्ट्रीय भजनोपदेशक आचार्य नरेश निर्मल मण्डली ने आध्यात्मिक , प्रागऐतिहासिक, समाज सुधार, राष्ट्रीय एकता एवं ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित भजनों से शमा बांध दी। समारोह में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों से अधिक रही।

समारोह में श्री उषुरवुद्ध यशपाल 'यश' डॉ. राम पाल, श्रुति शास्त्री इत्यादि ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुनील अरोड़ा ने किया।

आर्य समाज राधापुरी, डी-26, दिल्ली का 60वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज राधापुरी, डी-26 दिल्ली का 60वां वार्षिकोत्सव दिनांक 2 अक्टूबर 2015 को आयोजित किया जा रहा है।

जिसके उपलक्ष्य में दिनांक 27 सितम्बर 2015 को प्रातः 6 से 7.30 बजे के बीच प्रभात फेरी निकाली जाएगी। वार्षिकोत्सव में बच्चों को साथ जरूर लेकर आयें।

विनीत : श्री रमेश चन्द्र आर्य प्रधान; 09818852009, **श्रीमती कौशल्या मक्कड़** प्रधाना; मो. 09818415904;

आर्य नेता डॉ. सत्यपाल सिंह जी का आर्य सभा मॉरीशस द्वारा स्वागत

आर्य सभा मॉरिशश के तत्त्वावधान में श्रावणी उपाकर्म महोत्सव का आयोजन बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने अपने ओजस्वी भाषण में महर्षि दयानन्द के उपदेशों का सुन्दर बखान करके उपस्थित पुलिस जवानों के अन्दर जन जागृति एवं नव चेतना का संचार किया। सभा में मॉरिशश के अनेकों गणमान्य व्यक्ति, युवाओं व महिलाओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। -हरी राम धनी

आर्य समाज नारायणा विहार, दिल्ली के तत्त्वावधान में
चतुर्वेदशतक पारायण यज्ञ

आर्य समाज नारायणा विहार के तत्त्वावधान में 'चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ' एवं श्रावणी वेद कथा सप्ताह का दिनांक 14 से 20 सितम्बर 2015 तक आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री वेदज्ञान की अमृत वर्षा करेंगे।

निवेदक -रवीन्द्र गर्ग मन्त्री; मो. 09999466611

Glimpses of the Rig Veda

Save me O Lord

O Sovereign Lord, may I never enter into a house of clay. My organs of the earthly body revel in pleasures and luxuries. I am Dgetting engrossed in soulless objects. The matter has fettered the spirit. I have lost sight of my nature and potentiality. O my Beloved, come, hold ny uplifted arms and lift me upto your lap. Pray, let me stay forever in your lovely and peaceful presence. There is joy and peace, bliss and eternal protection in your surveillance. No more I require the houses of illusory beatitude. O Slayer of clouds of nescience, grant me the inner light to behold my lustrous identity. May I share your exhilaration to keep away from all sins.

O Opulent and Bright, if through weakness I have erred and gone astray, forgive me, O Savior. In the midst of waters, thirst distresses me. Owing to sensual impulses, I am unable to get the delightful taste of anbrosia which you pour in the bounties of Nature. Save me, O Lord, my Heavenly Father.

मो षु वरुण मृन्मयं गृहं राजन्नहं गमम्। मृला सुक्षत्र मृलय।।

यदेमि प्रस्फुरन्निव दृतिर्न ध्मातो अद्रिवः। मृला सुक्षत्र मृलय।।

क्रत्वः समह दीनता प्रतीपं जगमा शुचे। मृला सुक्षत्र मृलय।।

(Rv. vii.89 1-3)

Mo su varuna mrnmayam grham rajann aham gamam.

mrla suksatra mrlaya..

Yademi prasphuranniva drtir na dhmato adrivah.

mria suksatra mriaya..

Katvah samaha dinata pratipam hagama suce.

mrla suksatra mrlaya..

God, Soul abd Nature - the Three Eternals

The verse is a nice metaphor explaining the Creation as a family of three eternals: the Infinite Supreme Self, the eternal primordial matter and the countless Jivas. None of these is born and none does die.

"Two birds which are closely associated and intimate friends perch of the same tree. Of them one, the lower self tastes its fruit, the other, the Superior Lord shines resplendently without tasting it."

The individual soul and the eternal soul are both conscious abd hence are friends. As revealed metaphorically, these two live together on a tree as two birds. The tree symbolises the world of matter. Owing to ignorance, the individual soul fails to recognise the Supreme Soul. It remains absorbed in the enjoyment of the worldly pleasures abd also experiencing sorrow. But the Supreme Soul remains existent as a silent witness and records the action of the individual soul.

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति।।

(Rv. I.164.20)

Dva suparna sayuja sakhaya samanam vrksam pari sasvajate.

tayor anyah pippalam svadv atty anasnan anyo abhi cakasiti..

The Mystic Agni

'Agni' hymns are sung in Rigveda as leading verses. The first hymn of the first book containing all the nine verses is associated with Agni. On the material plane, Agni may be seen as simple fire produced by attrition, but in a higher plane, it signifies solar heat and light. Then it may be universalized with the cosmic energy and guiding intelligence and finally, in the transcendental stage, it may be light of spirituality of the most adorable lord Himself. On a social instructor.

Agni is the foremost force, the foremost light and the foremost adorable. The Supreme Lord, who always is the foremost is the first to be invoked in "Yajan", as a prat of our sacred duties.

Book I, first hymn, fourth verse reads "O Agni, the adorable God,you are the protector of the unobstructed cosmic sacrifice of Creation. May the blessings from all corners assuredly reach the seekers of truth."

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।

स इद्देवेषु गच्छति।। (Rv. I.1.4)

Agne yam yajnam adhvaram visvatah paribhur asi. sa id devesu gachhati..

बोध कथा — अंगुलीमाल का हृदय-परिवर्तन

बुद्ध घूम रहे थे भारत में। भ्रमण करते हुए मगध में पहुंचे तो एक नगरी के बाहर डेरा डालकर बैठ गये। लोग उनके दर्शनों को आये। बुद्ध ने पूछा -'क्या हाल है?'

किसी ने कहा - 'मेरा लड़का मारा गया।'

किसी ने कहा-'पति मारा गया।'

किसी ने कहा-'भाई मारा गया।'

बुद्ध ने आश्चर्य से पूछा- 'क्या हो गया है तुम सबको? क्या कोई युद्ध यहां पर हुआ? क्या राजा ने अत्याचार आरम्भ कर दिया?'

लोगों ने कहा-'नहीं महाराज! राजा अच्छे हैं। युद्ध भी नहीं हुआ, परन्तु यहां एक डाकू रहता है अंगुलीमाल। वह प्रतिदिन एक नये व्यक्ति को मारकर उसकी अंगुली काट लेता है। जिस देवी की वह पूजा करता है, वह उसे एक हजार अंगुलियों की माला पहनाना चाहता है। उसे किसी ने कह दिया है कि ऐसी माला पहनाने से बड़ी सिद्धि मिल जाएगी।'

बुद्ध ने पूछा- 'कहां रहता है वह?'

लोगों ने बताया-'नगर के दूसरी ओर विशाल वन में।'

बुद्ध बोले-'मैं उसके पास जाऊंगा।'

लोगों ने अशान्त होकर कहा-'उसके पास मत जाइए महाराज।'

परन्तु बुद्ध मानने वाले नहीं थे। उठे और चल पड़े।

लोगों ने कहा-'उसे राजा के सिपाही भी नहीं हरा सके। आप बिना हथियार के क्या करेंगे?'

बुद्ध बोले-'मेरे पास ऐसा हथियार है, जिसके सम्मुख और कोई हथियार नहीं चलता' और वे नगर को पार करके जंगल में पहुंचे।

सुनसान और वीरान वन था वह-अत्यन्त भयानक। कहीं कोई व्यक्ति नहीं। कोई पशु नहीं। बुद्ध चलते गये। पर्याप्त आगे जाकर एक बूढ़ी स्त्री मिली। बुद्ध ने पूछा-'मां! क्या तुम जानती हो कि अंगुलीमाल डाकू इस वन में कहां रहता है?'

बूढ़ी स्त्री ने कहा-'जानती हूं पुत्र। परन्तु आगे मत जा, वापस चला जा यहां से। अंगुलीमाल मनुष्य नहीं, राक्षस है। वह तुम्हारा वध किये बिना मानेगा नहीं।'

बुद्ध हंसते हुए बोले-'ऐसी क्या बात है मां। वह मेरी हत्या क्यों करेगा?'

बूढ़ी स्त्री ने कहा-'तू जानता नहीं है बेटा। एक सहस्र अंगुलियों को वह एकत्रित करना चाहता था। आज अन्तिम रात्रि है। आज उसे देवी की पूजा करनी है, उसे माला पहनानी है और माला में एक अंगुली अभी कम है। आज प्रातःकाल से ही किसी व्यक्ति को खोजता फिरता है। मैं उसकी मां हूं। मैंने पूछा- यदि रात्रि तक कोई व्यक्ति न मिला तो क्या करेगा तू? वह बोला कि सांयकाल तक यदि कोई व्यक्ति न मिला तो तुझी को मार डालूंगा, तेरी अंगुली काटकर माला में पिरो दूंगा। मैं ऐसी डरी कि सांयकाल होने से पूर्व ही घर छोड़कर भाग उठी। अपनी मां को नहीं छोड़ता वह, तो तुझे कैसे छोड़ेगा? वापस चला जा यहां से! वह पहले पागल था, आज पूर्ण पागल हो गया है।'

बुद्ध बोले-'मुझे मरने का डर नहीं है। मैं उसे मिलूंगा अवश्य। तुम बताओ वह रहता कहां है?'

बूढ़ी स्त्री ने कहा-'वृक्षों के काले झुरमुट के उस पार उसका मकान है। उसमें मिलेगा वह, परन्तु मैं अब भी कहती हूं न जा।'

बुद्ध हंसते हुए आगे बढ़े। झुरमुट के उस पार चले गये। सामने मकान दृष्टिगोचर हुआ। उसके समीप जाकर बोले-'कोई है?'

अन्दर से हुंकार की आवाज आई। थोड़ी देर में अंगुलीमाल बाहर आया, हाथ में तीक्ष्ण तलवार लिये। द्वार के बाहर आकर बोला-'कौन हो तुम?'

बुद्ध बोले-'क्या तुम्हीं अंगुलीमाल हो?'

डाकू ने चिल्लाकर कहा-'हां, तुम्हारी मृत्यु तुम्हें यहां ले आई है, मैं तुम्हारी गर्दन काटूंगा।'

बुद्ध हंसते हुए बोले-'मैं गर्दन ही कटवाने आया हूं। इसलिए आया हूं कि तुम्हारी पूजा पूरी हो जाए। आगे बढ़ो। काटो यह गर्दन।' और उन्होंने गर्दन झुका दी।

अंगुलीमाल प्रसन्नता से चिल्लाकर आगे बढ़ा, तलवार उठाकर। परन्तु यह क्या। तलवार वाला हाथ जहां का तहां रुक गया। कांपते हुए उसने कहा-'यह क्या हो गया मुझको? कौन हो तुम?'

बुद्ध बोले-'मैं हूं गौतम।'

डाकू ने तलवार फेंक दी। आश्चर्य से बोला-'आप ही क्या गौतम बुद्ध हो? आप ही क्या मरने के लिए आए हो?'

बुद्ध ने कहा-'हां, मैं ही गौतम हूं। मैं मरने के लिए आया हूं।'

अंगुलीमाल कांपती हुई आंसू-भरी आवाज में बोला-'मुझे माफ कर दो गौतम। मैंने बहुत पाप किये हैं। मेरे पापों का कोई प्रायश्चित नहीं।'

गौतम आगे बढ़े। उसके माथे को छूकर बोले-'घबराओ नहीं, मैंने तुम्हारे पाप नष्ट कर दिये। मैंने तुम्हारे मन को बदल दिया।'

यही अंगुलीमाल बाद में भिक्षु बना। लंका में जाकर बौद्ध-धर्म का प्रचार उसने किया। **-साभार : बोध कथाएं**

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज : अतीत एवं वर्तमान

प्रस्तुत लेख हमें आज याद दिलाता है वे ज्ञात-अज्ञात आर्यजन जिन्हें सोते-जागते, उठते-बैठते आर्य समाज के प्रचार की ही चिन्ता रहती थी। उन्हीं के त्याग, तपस्या और समर्पण भाव से किया गया भूतकाल का कार्य वर्तमान में आर्य समाज के जीवन का आधार है। -सम्पादक

एक सौ चालीस वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा मुम्बई में आर्य समाज की विधिवत् स्थापना की गयी थी। उन्होंने इसकी स्थापना किसी नये सम्प्रदाय, मत या पन्थ के रूप में नहीं की थी, वरन् इसे एक ऐसे संगठन के रूप में स्थापित किया था जिसके सुनिश्चित उद्देश्य और सुनिर्धारित नियम हैं। इस समाज की स्थापना का स्पष्ट उद्देश्य था कि सम्पूर्ण संसार का उपकार किया जाये या मानव मात्र का हित-कल्याण सम्पादित किया जाए यानि सबकी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति की जाए। स्वामी जी को यह अभिप्रेत था कि लौकिक उन्नति और परमार्थ साधन दोनों द्वारा स्वदेश (भारत) का हित किया जाये और अपने इस कार्य को स्वदेश तक ही सीमित न रखकर सम्पूर्ण संसार या मनुष्य मात्र के हित के लिए प्रयत्न किया जाये। आर्य समाज के नौंवे नियम में इसी बात को अधिक स्पष्ट रूप से कहा गया है, ''प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।'' सत्रहवें नियम में इस बात को और अधिक स्पष्ट कर दिया गया था, ''इस समाज में स्वदेश के हितार्थ दो प्रकार की शुद्धि के लिए प्रयत्न किया जायेगा, एक परमार्थ दूसरी लोक व्यवहार। इन दोनों का शोधन और शुद्धता की उन्नति तथा सब संसार के हित की उन्नति हो जायेगी।''

मनुष्यों के वैयक्तिक एवं सामूहिक हित-कल्याण का यह महत्त्वपूर्ण कार्य ऐसे लोगों द्वारा सम्पादित किया जा सकता है, जो सत्य-विद्यादि गुणयुक्त, उत्तम गुण-कर्म-स्वभाव वाले, धर्मात्मा और परोपकारी हों। इसी प्रकार के लोगों को ही महर्षि दयानन्द ने आर्य माना है और उन्हीं के संगठन को ''आर्य समाज'' की संज्ञा दी है। उन्हें यही अभीष्ट थी कि सत्पुरुष, सदाचारी और परोपकारी व्यक्ति आर्य समाज के सभासद् बनें (मुम्बई में निर्धारित आठवां नियम) और वे मनुष्यमात्र के हित-कल्याण के सम्पादन के लिए प्रयत्न करें।

मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना करते समय स्वामी जी के मन में कौन से विचार थे, इसकी जानकारी उस भाषण द्वारा प्राप्त की जा सकती है, जो उन्होंने समाज को स्थापित करने का आग्रह करने वाले लोगों के समक्ष दिया था। उन्होंने कहा था कि ''यदि आप समाज द्वारा मानव-समाज के हित के लिए कुछ कर सकते हैं तो समाज की स्थापना अवश्य कीजिए। मैं आपके मार्ग में बाधक नहीं बनूंगा। पर यदि आप उसका संगठन समुचित रूप से नहीं करेंगे तो भविष्य में अनेक कठिनाईयां उत्पन्न हो जायेंगी। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं आपका पथ-प्रदर्शन उसी प्रकार से करूंगा, जैसेकि दूसरों का करता हूं। यह बात स्पष्ट रूप से अपने मन में रख लीजिए। मेरे मन्तव्य कोई असाधारण व अद्वितीय नहीं हैं और न मैं सर्वज्ञ ही हूं। अतः यदि युक्ति पूर्वक विचार-विमर्श के अनन्तर भविष्य में मेरी कोई भूल आपके आगे चलकर आए तो उसे ठीक कर लीजिए। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो यह समाज भी आगे चलकर एक सम्प्रदाय बनकर रह जाएगा। भारत में जो मत-मतान्तर विद्यमान है।

उनका कारण यही है कि इनमें गुरु के वचन को सत्य की कसौटी मान लिया गया, जिसके परिणाम स्वरूप लोग धर्मान्थ हो गये। उनमें कलह उत्पन्न हो गया। सत्य ज्ञान का विनाश हो गया और वे पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होने लगे। भारत की वर्तमान दुर्दशा इसी ढंग से हुई है और इसी ढंग से समाज का रूप भी एक अन्य सम्प्रदाय का हो जाएगा। यह मेरी निश्चित सम्मति है। भारत में चाहे कितने ही विभिन्न साम्प्रदायिक मत-मनान्तर प्रचलित रहें पर यदि वे सब वेदों की मान्यता स्वीकार करते हैं तो वे सब छोटी-छोटी नदियां वैदिक धर्म के महासमुद्र में मिलकर एक हो जायेंगी और धर्म की एकता स्थापित हो सकेगी।'' (द्रष्टव्य आर्य समाज का इतिहास, प्रथम भाग, सम्यकेतु विद्यालंकार, पृष्ठ 251)

मुम्बई समाज की स्थापना के समय अपने व्याख्यान में स्वामी जी ने यह भी कहा था, ''हमारा कोई स्वतंत्र मत नहीं है। मैं तो वेद के अधीन हूं। हमारे भारत में 25 करोड़ आर्य है। किसी-किसी बात में उनमें कुछ-कुछ मतभेद हैं, जो विचार करने से स्वयं ही दूर हो जायेंगे। मैं संन्यासी हूं और मेरा कर्त्तव्य यही है कि आप लोगों का जो अन्न खाता हूं, उसके बदले में जो सत्य समझता हूं, उसका निर्भयता से उपदेश करूं, मुझे यश-कीर्ति की कोई इच्छा नहीं है। चाहे कोई मेरी स्तुति करे या निन्दा करे, मैं अपना कर्त्तव्य समझकर धर्म का बोध कराता हूं। चाहे कोई माने या न माने, इसमें मेरी कोई हानि लाभ नहीं है।''

स्वामी जी आर्य समाज की विचारधारा को मानने वाले व्यक्तियों की संख्या की तुलना में उनके गुणों और सत्कर्मो को अधिक महत्त्व देते थे। उनके मत में ऐसे व्यक्तियों को ही सभासद् बनाया जाना चाहिए जो सत्पुरुष, सत्यनीतियुक्त और सदाचारी हों। वे यह भी चाहते थे कि इस समाज के प्रधान आदि सब सभासद् परस्पर प्रीति के लिए अभिमान, हठ, दुराग्रह और क्रोध आदि सब दुर्गुणों को छोड़कर उपकार, सुहृदयता एवं निर्वैर भाव से परस्पर सम्प्रीति करने वाले हों। उनके इसी भाव को मुम्बई में निर्मित आर्य समाज के 22वें नियम में व्यक्त किया गया था। वे इस सम्बन्ध में भी सजग थे कि जब तक नौकरी करने और कराने वाला आर्य समाज मिले तब तक और किसी की नौकरी न करें और न किसी अन्य को नौकर रखें। (द्रष्टव्य नियम संख्या 26)।

मुम्बई आर्य समाज की स्थापना के समय आरम्भ में लगभग 100 व्यक्ति उसके सदस्य थे, जिसमें स्वामी जी भी सम्मिलित थे। अधिकांश सदस्यों के चाहने पर भी स्वामी जी ने कभी भी आर्य समाज का प्रधान या अधिनायक होना स्वीकार नहीं किया। वे एक साधारण सदस्य के रूप में ही समाज की सर्वतोमुखी उन्नति में संलग्न रहे। वे कदापि यह नहीं चाहते थे कि आर्य समाज सम्प्रदाय का रूप धारण करे और उन्हें गुरु मानकर उनकी पूजा करने लगें। अतः वे इस विषय में इतने अधिक सावधान थे कि मुम्बई में समाज की स्थापना हो जाने पर जब श्री हरिश्चन्द्र चिन्तामणि ने उनकी फोटो लेनी चाही तो स्वामी जी ने फोटो की अनुमति इस शर्त पर दी कि आर्य समाज मंदिर में उनकी फोटो न रखी जाये। यह दूसरी बात है कि उनके इस आदेश की अपेक्षा कर आज आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं आदि में उनके विविध रूपों में फोटो लगाये जाते हैं तथा भित्तियों पर जीवन की विभिन्न घटनाओं को प्रदर्शित करने वाले काल्पनिक चित्र बनवाये जाते हैं।

स्वामी जी ने प्रथम आर्य समाज की स्थापना के साथ ही यह व्यवस्था कर दी थी कि इस समाज में प्रत्येक देश के मध्य एक प्रधान समाज होगा और अन्य समाज शाखा-प्रशाखा होंगे (नियम 3) तथा अन्य सब समाजों की व्यवस्था प्रधान समाज के अनुकूल रहेगी (नियम 4)। इस व्यवस्था में प्रधान समाज में स्वामी जी का आशय प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा से रहा होगा। प्रांत, देश, विदेश की समाजों में पारस्परिक समन्वय बनाये रखने तथा विभिन्न मतों व सम्प्रदायों के विकास की आकांक्षा से बचे रहने की दृष्टि से यह प्रावधान अत्यावश्यक एवं समयोचित था। इसके स्वामी जी की दूर दृष्टि का संकेत मिलता है।

मुम्बई आर्य समाज की स्थापना के बाद स्वामी जी लगभग 8 वर्ष जीवित रहे और उनका यही प्रयत्न रहा कि सभी समाज एक सूत्र में आबद्ध रहें तथा आर्य समाज तथा आर्य समाज का कार्य निर्बाध रूप से आगे बढ़ता रहे। वे आजीवन अपने मन्तव्यों के अनुरूप अपने व्याख्यानों, शास्त्रार्थो एवं साहित्य के माध्यम से लोक हितार्थ, मूर्ति पूजा, धार्मिक अंध-विश्वास तथा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जनजागृति पैदा करने के लिये आन्दोलन करते रहे। ये ही आन्दोलन अंततः उनकी मृत्यु का कारण बने। स्वामी जी ने कितने उच्च आदर्शों एवं मन्तव्यों को सामने रखकर आर्य समाज के नियम-उपनियम निर्धारित कर कैसी विलक्षण व्यवस्था की थी ताकि सभी सभासद एक सूत्र में बंधे रहकर समाज के कार्य को आगे बढ़ाते हुए 'कृणवन्तो विश्वमार्यम्' को साकार करने में सन्नद्ध रहें। तदनुरूप न केवल भारत के विभिन्न नगरों में 85से अधिक आर्य समाजें थीं जो एक शताब्दी पूरी होते-होते भारत तथा विदेशों में आशातीत वृद्धि पा रही हैं। उनके माध्यम से महर्षि की विचारधारा का आशातीत प्रचार-प्रसार भी हुआ।

...शेष अगले अंक में

**-डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार,
आर्य विरक्त (वानप्रस्थसंन्यास)
आश्रम, ज्वालापुर-हरिद्वार**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुदित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुदित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुदित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

7 सितम्बर से 13 सितम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 10 सितम्बर/ 11 सितम्बर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 सितम्बर, 2015

स्वास्थ्य चर्चा

घरेलू उपयोग की छोटी-छोटी चीजों से रोगों को करें नमस्ते

1. हरी हल्दी (कच्ची हल्दी) व तुलसी की पत्तियों का रस सम भाग लेकर शहद में मिलाकर सर्दी में बच्चों को पिलाने से उनकी पसली चलना बन्द हो जाती है।

2. लहसुन के सेवन से श्वेत कणों की संख्या और उनकी सक्रियता बढ़ती है। इससे कैंसर की संभावना कम होती है व आंखों की रोशनी भी बढ़ती है।

3. तिल और खसखस (पोश्तादाना) को बराबर मात्रा में लेकर उसे पीस लें उसमें शक्कर या गुड़ मिलाकर शर्बत बनाकर सर्दी में बच्चों को पिलाने से सर्दी की छोटी-मोटी बीमारियां दूर हो जाती हैं।

4. फुंसी उठते ही यदि काली मिर्च पानी में घिसकर उसका लेप फुंसी पर कर देने से फुंसी बैठ जाती है।

5. मूली का नियमित सेवन करने वालों को ब्लडप्रेशर नहीं होता। उच्च रक्तचाप में मूली का रस अथवा एक छोटी मूली रोजाना खानी चाहिए।

6. शिशु को दस्त लगने पर जायफल को साफ पत्थर के पटे पर पानी के साथ 20-25 बार घिसकर उस घोल को पिलाने से शिशु के पतले दस्त बन्द हो जाते हैं।

7. पेट में कीड़े हों तो काली मिर्च का चूर्ण छाछ में मिलाकर सुबह-शाम पीने से कीड़े मरकर दस्त के साथ निकल जाते हैं।

8. दालचीनी का चूर्ण तथा पिसा कत्था 1-1 ग्राम पानी के साथ सुबह-शाम लेने से दस्त बंद हो जाते हैं।

9. दाद, खाज, खुजली होने पर सरसों के तेल में आक के पत्तों का रस और हल्दी मिलाकर गर्म करके हल्का गुनगुना चर्म रोग पर लगाने से रोग से मुक्ति मिल जाती है।

प्रतिष्ठा में,

आर्य समाज लाजपत नगर दिल्ली द्वारा वेद प्रवचन का आयोजन

आर्य समाज मंदिर लाजपत नगर-2 सी के तत्त्वावधान में दिनांक 7 से 13 सितम्बर को ज्ञानवर्द्धक वेद प्रवचन कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें डॉ. वेद प्रकाश शास्त्री अपने प्रवचन से अमृत वर्षा करेंगे। व श्रीमती कविता आर्या भक्ति संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगी। -राजेश मेंदीरत्ता प्रधान

आर्य संदेश को फेसबुक पर पढ़े :

margdrashan@gmail.com

इंटरनेट पर पढ़े :

www.thearyasamaj.org/article

चुनाव समाचार

आर्य समाज सूरजमल विहार, दिल्ली

प्रधान - **अशोक कुमार गुप्ता**

मंत्री - **सुभाष ढ़ींगरा**

कोषाध्यक्ष - **श्रीमती आदर्श शर्मा**

आवश्यकता है पोर्टल एवं इन्टरनेट विशेषज्ञ की

आवश्यकता है पोर्टल एवं इन्टरनेट विशेषज्ञ की जो आर्य समाज द्वारा संचालित पोर्टल की उपयोगिता और उसका विस्तार कर सकने में निपुण हो। आर्य समाजी विचारधारा वाले विशेषज्ञों को प्राथमिकता दी जाएगी। सम्पर्क करें:

संदीप आर्य, मो. 09650183339

हवन-यज्ञ के लिए सर्वोत्तम प्रदूषण मुक्त

गाय के गोबर से तैयार कन्डे (उपले)

मात्र 25/- पैकेट (टिक्की व समिधा आकार में उपलब्ध)

प्राप्ति स्थान

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली-110001 एवं सम्पर्क करें : विजय आर्य, मो. 09540040339

आवश्यकता है ड्राईवर की

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को आवश्यकता है। एक अनुभवी, कुशल, आर्य समाजी विचारधारा के ड्राईवर की। जिसे दिल्ली की सड़कों का ज्ञान हो व दिल्ली से बाहर भी जा सके संपर्क करें।

संदीप आर्य, मो. 09650183339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह